Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

Theories of Sustained Attention

×o×

दीर्घीकृत अवधान की व्याख्या के लिए कई सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है जो निम्नांकित है :—

(1) प्रत्याशा सिद्धांत (Expectancy theory)

इस सिद्धांत में पृष्ठभूमि सूचनाओं के संचयन पर अधिक बल डालते हुए दीर्घीकृत अवधान की व्याख्या करने की कोशिश की गयी है। Signals जिनकी पहचान दीर्घीकृत अवधान के दौरान करनी होती है, के बारे में संचित सूचनाओं तथा उन अवस्थाओं जिनमें संकेत उपस्थित हो सकता है, की सूचनाओं की अहम भूमिका होती है। इस Theory पर Becker, 1963 तथा Deese 1955 ने भी अधिक बल डाला है, के अनुसार निगरानी प्रयोगों में विभिन्न प्रयासों में विवेचित संकेत के विभिन्न समयों में उपस्थिति के आधार पर प्रयोज्य एक विशेष तरह का प्रत्याशा विकसित करता है जिनके कारण वह यह कह पाता है कि आने वाले प्रयासों में विवेचित संकेत किस समय उपस्थित हो सकता है। इस सिद्धांत के अनुसार संकेत की सही

Scanned with CamScanner

पहचान करने की तत्परता इस प्रत्याशा स्तर से धनात्मक रूप से सम्बन्धित होता है। इस सिद्धांत की यह भी मान्यता है कि निगरानी प्रयोगों में प्रयोज्यों द्वारा संकेत पहचान के निष्पादन में जो धीरे-धीरे कमी आती है, उसका कारण विवेचित संकेत की उपस्थिति के सही समय के बारे में पूर्वानुमान लगाने की क्षमता में उत्तरोत्तर कमी होना है। जब प्रयोज्यों को संकेत के पहचान से सम्बन्धित परिणाम ज्ञान प्रत्येक प्रयास में दे दिया जाता है, तो इससे उनके प्रत्याशा की परिशुद्धता में वृद्धि आ जाती है तथा उनके निष्पादन ह्रास रुक जाती है।

इस theory का एक महत्वपूर्ण prediction यह है कि निगरानी कार्य या दोर्घीकृत कार्य में निपुणता को प्रयोज्य के सामयिक अनिश्चितता में कमी लाकर उन्नत बनाया जा सकता है। इस तथ्य की सम्पुष्टि Belker, 1978 द्वारा एक अध्ययन में की गयी है। इस सिद्धांत का प्रयोगात्मक समर्थन उन मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी की गयी है जिन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया है कि निगरानी के प्रशिक्षण अवस्था के दौरान जिन प्रयोज्यों ने संकेत उपस्थिति का अधिक अनुभव किया, वे बाद की जाँच अवस्थाओं में उन प्रयोज्यों की तुलना में

अधिक उत्तम निष्पादन दिखलाये जिन्हें प्रारंभ के प्रशिक्षण अवस्था में संकेत उपस्थिति का अनुभव अधिक नहीं कराया गया था। उन मनोवैज्ञानिकों में McFarland & Halcomb, 1970 के नाम अधिक मशहूर हैं।

इन प्रयोगात्मक समर्थन के बावजूद इस सिद्धांत की कुछ आलोचनाये की गयी हैं जो निम्नांकित हैं —

(i) इस सिद्धांत द्वारा सभी तरह के निगरानी कार्यों की संतोषजनक व्याख्या नहीं हो पाती है। जैसे Moore & Gross 1973 ने अपने अध्ययन में पाया है कि ऐसे कार्यों में प्रयोज्य सिर्फ सामयिक औसतन का ही उपयोग कर विशेष प्रत्याशा का निर्माण नहीं करते हैं, बल्कि इसके अलावे कई तरह के और भी व्यवहार करते हैं जिनका वर्णन इस सिद्धांत में नहीं है।

(ii) इस सिद्धांत के अनुसार Knowledge of results का प्रयोज्य के ऊपर अभिप्रेरणात्मक प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उसकी प्रत्याशा क्षमता में इतनी अधिक वृद्धि हो जाती है कि वह सही उद्दीपक या संकेत की पहचान करने में समर्थ हो जाता है। आलोचकों के

सिद्धांत के इस दावे को अतिरंजित कहकर ठुकरा दिया है।

(iii) यदि यह सिद्धांत सही है तो संकेत या उद्दीपक की उपस्थिति के समय का आकलन निगरानी कार्यकुशलता से सम्बद्ध होना चाहिए, परन्तु मैकग्राथ एवं ओहेनलोन ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि सच्चाई ऐसी नहीं है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के आलोक में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यद्यपि प्रत्याशा विकास की घटना दीर्घीकृत अवधान में योगदान करता है परन्तु इसकी भूमिका उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है।

=

Scanned with CamScanner